हरियाणा में हाल ही में प्राकृतिक कृषि पर आयोजित दो प्रशिक्षण कार्यशालाओं पर रिपोर्ट

हरियाणा में हाल ही में प्राकृतिक खेती दो पर प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन किया गया. एक को (9-10 मई, 2001) SCRIA, जो रेवाड़ी, और हरियाणा और राजस्थान के पड़ोसी जिलों में काम करने वाला संगठन है, द्वारा और दूसरे (13-15 मई, 2011) को रोहतक के एक अनौपचारिक समूह द्वारा द्वारा आयोजित किया गया. खोरी (रेवाड़ी) प्रशिक्षण में, महाराष्ट्र से श्री सुभाष शर्मा मुख्य प्रशिक्षक थे और लाखनमाजरा (रोहतक) में हैदराबाद से श्री किशन राव थे. प्रतिभागियों की संख्या क्रमशः लगभग 100 और 150 रही. दोनों जगह महिला किसान भी शामिल थीं. इनमें से लगभग आधे प्रशिक्षण में कुछ समय के लिये ही आये. कुल मिला कर लगभग 70 गांवों का प्रतिनिधित्व रहा और 80 के लगभग किसानों ने प्राकृतिक/रसायन मुक्त खेती के प्रयोग करने की प्रतिबद्धता जताई है. हालांकि भाग लेने वालों की संख्या, विशेष तौर पर रोहतक में, उम्मीद से कम थी लेकिन जो लोग टिके रहे, वो आश्वस्त और प्रतिबद्ध प्रतीत हुये. कई जिन्होंने पहले रुचि दिखाई थी और जो व्यक्तिगत रूप से आमंत्रित किये गये थे, नहीं आए परन्तु कई बिन बुलाए आ गये और वे विभिन्न गांवों से थे. कम से कम रोहतक में तो यह हुआ.

खैर कुल मिला कर प्रयोग करने तो तैयार किसानों की संख्या पर्याप्त है. अच्छी बात यह है कि दर्जन के लगभग जिन किसानों ने पिछले साल रासायन मुक्त खेती को अपनाया था वो प्रयोग के परिणामों से संतुष्ट हैं. खरीफ / मानसून की फसल तो पैदावार के मामले में भी ठीक रही, लेकिन रबी की मुख्य फसल गेहूं की पैदावार कम रही, लेकिन किसानों की, कम से कम आंशिक रूप से, भरपाई उच्च बाज़ार भाव और घर-द्वार से ही बिक्री तथा मांग के पैदावार से कहीं अधिक होने से हो गई.

आगामी योजना के रूप में जिन किसानों ने रासायनिक मुक्त प्राकृतिक खेती के प्रयोग करने के लिए इच्छा व्यक्त की है, उन से सम्पर्क पर ध्यान केंद्रित करने का निर्णय लिया गया. अगले महीने भर में, बुआई के मौसम से पहले यह करना होगा. हमारे सीमित मानव संसाधन को देखते हुए, यह मुश्किल हो सकता है लेकिन काम यही है. इसके साथ ही, जो बैठक के लिए आये लेकिन जल्द ही चले गये, उन से भी संपर्क करने की जरूरत है. बुआई खत्म हो जाने के बाद, कुदरती खेती अपनाने वाले किसानों की एक बैठक प्रस्तावित है ताकि वो अपने अनुभव सांझा कर सकें, और उन का संगठन बन सके. रोहतक में कुदरती खेती अपनाने वाले किसानों के परिवारों की महिला सदस्य और अन्य महिलाओं के लिए एक विशेष प्रशिक्षण शिविर भी प्रस्तावित है. इस के बाद कुदरती खेती के सफल अनुभवों को देखने के लिये अगस्त-सितम्बर में अन्य राज्यों के

दौरे भी प्रस्तावित हैं.

प्रशिक्षण के पहले प्रमुख प्रयास के तौर पर इन शिविरों में खेती के सभी बुनियादी पक्षों की चर्चा की उम्मीद थी. इस के विपरीत दोनों शिविर एक सूत्री विषयों पर चर्चा सीमित हो गये. जबकि रेवाड़ी प्रशिक्षण में जल संरक्षण की खाई पद्धति पर ध्यान केंद्रित किया गया, रोहतक प्रशिक्षण में मुख्य जोर मिश्रित हरी खाद पर था. दोनों प्रशिक्षकों ने पौध संरक्षण और कीट प्रबंधन के मुद्दों पर चर्चा करने की अनिइच्छा जताई. उनका तर्क था कि यदि मिट्टी के स्वास्थ्य का ध्यान रखा जाये, तो ये समस्या ही खड़ी ही नहीं होंगी. लेकिन पहली बार प्रयोग कर रहे किसानों के लिए, पौध संरक्षण और कीट प्रबंधन के मुद्दों की चर्चा की शायद एक आश्वस्तकारी भूमिका हो सकती है. रोहतक में प्रशिक्षण के शुरू में भाषा की अड़चन भी रही, और यह एक कारण हो सकता है कि कई किसान शुरु में ही उठ कर चले गये. हालांकि, बाद में, अच्छा संवाद स्थापित हो गया था. अगर उद्घाटन सत्र और सामान्य सिद्धांतों पर चर्चा स्थानीय व्यक्तियों द्वारा की जाती तो शायद यह समस्या नहीं आती. इस ठीक विपरीत हमने सब कुछ बाहर के प्रशिक्षकों पर छोड़ दिया था.

रेवाड़ी में, और अधिक विस्तृत प्रशिक्षण की जरूरत महसूस की गई, विशेष रूप से शुष्क खेती की स्थिति में. लाखनमाजरा (रोहतक), में किसानों की मुख्य समस्या बढ़ते जल स्तर और बरसात के मौसम में जल भराव की है. व्यक्तिगत किसान के स्तर पर इसके बारे में किया जा सकता है?

खोरी (रेवाड़ी) में, व्यवस्था SCRIA, जिसका की अपना एक संस्थागत ढांचा है, द्वारा की गई. लाखनमाजरा (रोहतक) में स्थानीय व्यवस्था ग्रामीणों द्वारा की गई और भोजन एवं ठहरने पर आया लगभग 25000 रु का खर्चा भी उन्होंने वहन किया. अन्य मद पर खर्च लगभग 14,000 रुपए की राशि का बड़ा भाग प्रतिभागियों के चन्दे से पूरा हो गया.